नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों पर आधारित है।

नं. 1

संजीव®

बुक्स

सामाजिक विज्ञान-IX

(1) भारत और समकालीन विश्व-1 (2) समकालीन भारत-1

(3) लोकतान्त्रिक राजनीति-1 (4) अर्थशास्त्र

(कक्षा 9 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 260/-

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

मूल्य : ₹ 260.00

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

मुद्रक :
मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर
★ ★ ★ ★ ★

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

भारत और समकालीन विश्व-1 (इतिहास)

खण्ड-I : घटनाएँ और प्रक्रियाएँ

1. फ्रांसीसी क्रांति 1–17
2. यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रांति 18–36
3. नात्सीवाद और हिटलर का उदय 36–57

खण्ड-II : जीविका, अर्थव्यवस्था एवं समाज

4. वन्य-समाज और उपनिवेशवाद 57–72
5. आधुनिक विश्व में चरवाहे 73–87

मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न **88–90**

समकालीन भारत-1 (भूगोल)

1. भारत–आकार और स्थिति 91–100
2. भारत का भौतिक स्वरूप 100–114
3. अपवाह 114–129
4. जलवायु 130–151
5. प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य प्राणी 152–165
6. जनसंख्या 166–174

मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न **174–178**

लोकतान्त्रिक राजनीति-1 (राजनीति विज्ञान)

1. लोकतन्त्र क्या? लोकतन्त्र क्यों? 179–196
2. संविधान निर्माण 196–210

3. चुनावी राजनीति 210–229
4. संस्थाओं का कामकाज 229–245
5. लोकतांत्रिक अधिकार 245–262

अर्थशास्त्र

1. पालमपुर गाँव की कहानी 263–280
2. संसाधन के रूप में लोग 280–293
3. निर्धनता : एक चुनौती 293–304
4. भारत में खाद्य सुरक्षा 304–314

सामाजिक विज्ञान–कक्षा IX

भारत और समकालीन विश्व-1 (इतिहास)

खण्ड I : घटनाएँ और प्रक्रियाएँ

1. फ्रांसीसी क्रान्ति

पाठ-सार

I. अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में फ्रांसीसी समाज–

(1) सन् 1774 में बूर्बो राजवंश का लुई XVI फ्रांस की राजगद्दी पर आसीन हुआ। राज्यारोहण के समय उसने राजकोष खाली पाया। राजकोष के खाली होने के कारण थे—लम्बे समय तक चले युद्ध, राजदरबार की शान-शौकत को बनाए रखने की फिजूलखर्ची, कर्ज का ब्याज। अपने नियमित खर्चों को चलाने के लिए फ्रांसीसी सरकार इस समय करों में वृद्धि करने को बाध्य हो गई थी। लेकिन यह कदम भी पर्याप्त नहीं था।

(2) अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में फ्रांसीसी समाज मध्यकालीन सामंती व्यवस्था का अंग था। समाज तीन वर्गों (एस्टेट्स) में बंटा हुआ था—

(i) **प्रथम एस्टेट**–पादरी वर्ग

(ii) **द्वितीय एस्टेट**–कुलीन वर्ग

(iii) **तृतीय एस्टेट**—जनसाधारण, जैसे—(a) समृद्ध एवं शिक्षित वर्ग (b) किसान और कारीगर (c) छोटे किसान, भूमिहीन मजदूर, नौकर आदि।

(3) प्रथम दो एस्टेट्स को करों से छूट आदि कुछ विशेषाधिकार जन्मना प्राप्त थे। कुलीन वर्ग को कुछ अन्य सामन्ती विशेषाधिकार भी प्राप्त थे। वह किसानों से सामन्ती कर वसूल करता था। तीसरे एस्टेट के सभी लोगों को सरकार को प्रत्यक्ष कर (टाइल) तथा अनेक अप्रत्यक्ष कर देने होते थे।

(4) चर्च भी किसानों से टाइद नामक एक धार्मिक कर वसूलता था। यह कर कृषि उपज के दसवें हिस्से के बराबर होता था। इस प्रकार राज्य के वित्तीय कामकाज का सारा बोझ करों के माध्यम से जनता वहन करती थी।

जीने का संघर्ष–फ्रांस की जनसंख्या के बढ़ने से अनाज की बढ़ती माँग, खाद्य पदार्थों की कीमत में तेजी से होती वृद्धि, मजदूरी का महंगाई की बढ़ती दर के अनुसार न बढ़ने आदि से गरीब-अमीर की खाई बढ़ती गई। सूखे व ओले के प्रकोप से पैदावार के गिरने से जीविका संकट पैदा हो जाता था। ऐसा जीविका संकट प्राचीन राजतंत्र (1789 से पहले के फ्रांसीसी समाज एवं संस्थाओं) के दौरान काफी आम था।

उभरते मध्यम वर्ग ने विशेषाधिकारों के अन्त की कल्पना की–अठारहवीं सदी में तीसरे एस्टेट में एक नये शिक्षित और समृद्ध सामाजिक समूह का उदय हुआ जिसे मध्य वर्ग कहा गया। तृतीय एस्टेट में सौदागरों एवं निर्माताओं के इस मध्य वर्ग के अलावा प्रशासनिक सेवा व वकील जैसे पेशेवर लोग भी शामिल थे। इन लोगों ने विशेषाधिकारों की व्यवस्था वाले शासन के अन्त की कल्पना की। किसी भी व्यक्ति की सामाजिक हैसियत का आधार उसकी योग्यता होनी चाहिए। स्वतंत्रता, समान नियमों तथा समान अवसरों के विचार पर आधारित यह परिकल्पना जॉन लॉक, रूसो जैसे दार्शनिकों ने प्रस्तुत की। मांटेस्क्यू ने शक्ति पृथक्करण के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। फ्रांसीसी चिंतकों के लिए अमेरिकी संविधान और उसमें दिए गए व्यक्तिगत अधिकारों की गारंटी प्रेरणा का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत थी। इसी समय राज्य के खर्चों को पूरा करने के लिए लुई XVI द्वारा फिर से कर लगाए जाने की खबर से विशेषाधिकार वाली व्यवस्था के विरुद्ध गुस्सा भड़क गया।

II. क्रांति की शुरुआत–

(1) फ्रांसीसी सम्राट लुई सोलहवें ने 5 मई, 1789 को नये करों के प्रस्ताव के अनुमोदन के लिए एस्टेट्स जेनराल (प्रतिनिधि सभा) की बैठक बुलाई। इसमें पहले और दूसरे एस्टेट के 300-300 प्रतिनिधि थे तथा तीसरे एस्टेट के 600 प्रतिनिधि थे।

(2) एस्टेट जेनराल के नियमों के अनुसार प्रत्येक वर्ग को एक मत देने का अधिकार था। लेकिन इस बार तीसरे वर्ग के प्रतिनिधियों ने पूरी सभा द्वारा मतदान किए जाने की माँग रखी।

(3) तृतीय एस्टेट के प्रतिनिधि 'पूरी सभा द्वारा मतदान' की अपनी मांग के अस्वीकार होने पर, विरोध जताते हुए सभा से बाहर चले गये।

(4) 20 जून, 1789 को ये लोग वर्साय के इन्डोर टेनिस कोर्ट में जमा हुए। उन्होंने स्वयं को नेशनल असेम्बली घोषित किया तथा शपथ ली कि सम्राट की शक्तियों को कम करने वाला संविधान बनाने तक असेम्बली भंग नहीं होगी।

(5) पावरोटी की आसमान छूती कीमतों के कारण जनता भी आंदोलित थी। दूसरी तरफ सम्राट ने सेना को पेरिस में प्रवेश करने का आदेश दे दिया था। ऐसी स्थिति में क्रुद्ध भीड़ ने 14 जुलाई, 1789 को बास्तील पर धावा बोलकर उसे नेस्तनाबूद कर दिया।

(6) देहाती क्षेत्रों में किसानों ने कुदालों और बेलचों से ग्रामीण किलों पर आक्रमण कर दिया, अन्न भंडारों को लूट लिया तथा लगान सम्बन्धी दस्तावेजों को जलाकर राख कर दिया। कुलीन बड़ी संख्या में जागीरें छोड़कर भाग गए।

(7) अन्ततः लुई सोलहवें ने नेशनल असेम्बली को मान्यता दे दी और यह भी मान लिया कि उसकी सत्ता पर अब से संविधान का अंकुश होगा। 4 अगस्त, 1789 की रात को असेम्बली ने करों, कर्त्तव्यों तथा बन्धनों वाली सामन्ती व्यवस्था के उन्मूलन का आदेश पारित कर दिया। पादरी वर्ग के लोगों को अपने विशेषाधिकारों को छोड़ने के लिए विवश किया गया तथा धार्मिक कर समाप्त कर दिया गया तथा चर्च के स्वामित्व वाली भूमि जब्त कर ली गई। इस प्रकार कम से कम 20 अरब लिब्रे की सम्पत्ति हाथ में आ गई।

फ्रांस संवैधानिक राजतंत्र बन गया–नेशनल असेम्बली ने सन् 1791 में संविधान का प्रारूप पूरा कर लिया। सम्राट् की शक्तियों को विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका में हस्तांतरित कर दिया गया। इस प्रकार फ्रांस में संवैधानिक राजतंत्र की नींव पड़ी। इस संविधान ने कानून बनाने का अधिकार नेशनल असेम्बली को सौंप दिया। संविधान पुरुष एवं नागरिक अधिकार घोषणा-पत्र के साथ शुरू हुआ जिसमें जीवन, स्वतन्त्रता तथा कानून के समक्ष समानता के अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को जन्म से प्रदान किये गए। लेकिन नेशनल असेम्बली के चुनाव में सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार नहीं था। केवल सक्रिय पुरुषों (जो कम से कम तीन दिन की मजदूरी के बराबर कर चुकाते थे) को ही मत देने का अधिकार था। निर्वाचक की योग्यता प्राप्त करने तथा असेम्बली का सदस्य होने के लिए लोगों का करदाताओं की उच्चतम श्रेणी में होना जरूरी था।

III. फ्रांस में राजतंत्र का उन्मूलन और गणतंत्र की स्थापना–

(1) 1791 के संविधान से सिर्फ अमीरों को ही राजनैतिक अधिकार प्राप्त हुए थे। देश की आबादी के एक बड़े हिस्से को यह लगने लगा कि क्रांति के सिलसिले को आगे बढ़ाने की जरूरत है। समाज के कम समृद्ध हिस्से के लोगों ने अपने आपको संगठित किया ये जैकोबिन क्लब के सदस्य थे। उनका नेता मैक्स मिलियन रोबे स्पियर था। जैकोबिनों के एक बड़े वर्ग ने कुलीनों से अपने को अलग दिखाने के लिए धारीदार लम्बी पतलून पहनने का निर्णय लिया। इसलिए इन्हें 'सौं कुलौत' के नाम से जाना गया। ये स्वतंत्रता की प्रतीक लाल रंग की टोपी भी पहनते थे और सन् 1792 की गर्मियों में इन्होंने (जैकोबिनों ने) खाद्य पदार्थों की महँगाई एवं अभाव से क्रुद्ध होकर 10 अगस्त को ट्यूलेरिए के महल पर धावा बोल दिया। राजा को कई घंटों तक बंधक बनाए रखा। बाद में असेंबली ने शाही परिवार को जेल में डाल देने का प्रस्ताव पारित किया।

(2) 1792 में नये चुनाव कराये गये। 21 वर्ष से अधिक उम्र वाले सभी पुरुषों को मतदान का अधिकार दिया गया। नवनिर्वाचित असेम्बली को कन्वेंशन का नाम दिया गया। 21 सितम्बर, 1792 को इसने फ्रांस में राजतन्त्र का अन्त कर दिया तथा फ्रांस को एक गणतन्त्र घोषित कर दिया।

(3) लुई सोलहवें को न्यायालय द्वारा देशद्रोह के आरोप में मौत की सजा सुनाई गई तथा 1793 में प्लेस डी लॉ कॉन्कॉर्ड में उसे सार्वजनिक रूप से फाँसी दे दी गई।

प्रश्न 3. भारत के रेखा मानचित्र में निम्न चरवाहा समुदायों का क्षेत्र दर्शाइए—

(1) राइका (2) धंगर

(3) गद्दी (4) गोल्ला

(5) बंजारे

(6) कुरुमा तथा कुरुबा

(7) गुज्जर बकरवाल

(8) मरुस्थल क्षेत्र मालधारी

(9) भोटिया (10) गुज्जर (11) मोनपा।

उत्तर–

प्रश्न 4. अफ्रीका के रेखा मानचित्र में प्रमुख चरवाहा समुदायों को अंकित कीजिए।
उत्तर–

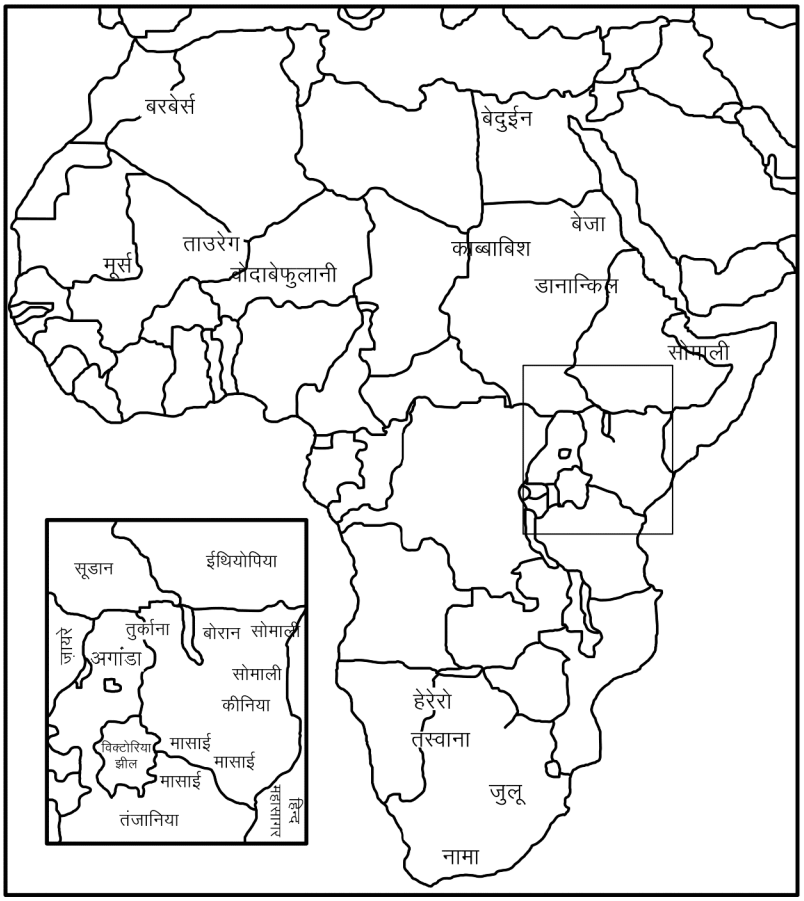

समकालीन भारत–1 (भूगोल)

1. भारत–आकार और स्थिति

पाठ-सार

(1) भारत की स्थिति–भारत उत्तरी गोलार्द्ध में 8°4′ उत्तर से 37°6′ उत्तर अक्षांश तथा 68°7′ पूर्व से 97°25′ पूर्व देशान्तर के बीच स्थित है। कर्क रेखा 23°30′ उत्तर में देश को लगभग दो बराबर भागों में बाँटती है। यहाँ बंगाल की खाड़ी में अण्डमान और निकोबार द्वीप-समूह एवं अरब सागर में लक्षद्वीप समूह स्थित है।

(2) भारत का आकार–भारत का क्षेत्रफल लगभग 32.8 लाख वर्ग किमी. है। यह विश्व का सातवाँ बड़ा देश है। भारत का क्षेत्रफल विश्व के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत है। 82°30′ पूर्व देशान्तर रेखा को भारत की मानक याम्योत्तर माना गया है।

(3) भारत तथा विश्व–प्राचीन काल से भारत का सम्पर्क विश्व के अन्य देशों से रहा है। भारत का पश्चिम-मध्य तथा पूर्वी एशिया एवं दक्षिणी एशिया के पड़ोसी देशों के साथ एक अद्‌भुत सम्पर्क रहा है तथा प्राचीन समय से ही इन देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध रहे हैं।

(4) भारत के पड़ोसी देश–भारत का दक्षिण एशिया में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत में 28 राज्य एवं 8 केन्द्र शासित प्रदेश हैं। भारत के प्रमुख पड़ोसी देश पाकिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार तथा अफगानिस्तान हैं।

पाठगत प्रश्न

पृष्ठ 2

प्रश्न–82°30′ पूर्व देशान्तर को भारत की मानक याम्योत्तर क्यों माना गया है?

उत्तर–भारत का पूर्व से पश्चिम में विस्तार लगभग 30° है। इसके कारण भारत के गुजरात से अरुणाचल प्रदेश के स्थानीय समय में दो घण्टे का अन्तर आ जाता है। इसे दूर करने के लिए 82°30′ पूर्व देशान्तर को भारत की मानक याम्योत्तर माना गया है। इससे पूरे देश में एक ही समय को माना जाता है।

प्रश्न–कन्याकुमारी और कश्मीर में दिन-रात की अवधि में अन्तर क्यों है?

उत्तर–कन्याकुमारी और कश्मीर में दिन-रात की अवधि में अन्तर निम्न कारणों से है—

(1) कन्याकुमारी भूमध्य रेखा के समीप स्थित है जबकि कश्मीर भूमध्य रेखा से बहुत दूर कर्क रेखा के भी उत्तर में स्थित है।

(2) कन्याकुमारी में लगभग पूरे वर्ष सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं जबकि कश्मीर में हमेशा तिरछी पड़ती हैं।

(3) इस प्रकार भिन्न अक्षांशों पर स्थित होने के कारण कन्याकुमारी तथा कश्मीर में दिन-रात की अवधि में अन्तर पाया जाता है। कन्याकुमारी में दिन-रात लगभग समान अवधि के होते हैं जबकि कश्मीर में ऋतु के अनुसार दिन-रात की अवधि बदलती रहती है।

पृष्ठ 4

प्रश्न–पश्चिमी और पूर्वी तटों पर केन्द्र-शासित क्षेत्रों की संख्या ज्ञात कीजिए।

उत्तर–पश्चिमी तट पर केन्द्र-शासित क्षेत्र हैं—(1) दादर और नगर हवेली एवं दमन और दीव (2) लक्षद्वीप समूह।

पूर्वी तट पर केन्द्रशासित क्षेत्र हैं—(1) पुदुच्चेरी, (2) अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह।

प्रश्न–क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ा एवं सबसे छोटा राज्य कौनसा है?

उत्तर–क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य राजस्थान एवं सबसे छोटा राज्य गोवा है।

प्रश्न–कौनसे राज्य अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तथा समुद्र तट को स्पर्श नहीं करते हैं?

उत्तर–निम्नलिखित राज्य अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तथा समुद्र तट को स्पर्श नहीं करते हैं—(1) छत्तीसगढ़ (2) झारखण्ड (3) मध्यप्रदेश (4) हरियाणा (5) तेलंगाना।

प्रश्न–(i) पाकिस्तान (ii) चीन (iii) म्यांमार और (iv) बांग्लादेश की सीमाओं को छूने वाले राज्यों को चार वर्गों में विभाजित कीजिए। उदाहरणार्थ उन राज्यों को एक वर्ग में रखिए जिनकी सीमाएँ पाकिस्तान से मिलती हैं। इसी तरह अन्य शेष वर्ग बनाइए।

उत्तर–(i) पाकिस्तान की सीमा को छूने वाले राज्य–गुजरात, राजस्थान, पंजाब।

(ii) चीन की सीमा को छूने वाले राज्य–हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश।

(iii) म्यांमार की सीमा को छूने वाले राज्य–अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर और मिजोरम।

(iv) बांग्लादेश की सीमा को छूने वाले राज्य–पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित चार उत्तरों में से उपयुक्त उत्तर चुनिए–

(i) कर्क रेखा किस राज्य से नहीं गुजरती है?
(क) राजस्थान (ख) उड़ीसा (ग) छत्तीसगढ़ (घ) त्रिपुरा।

(ii) भारत का सबसे पूर्वी देशांतर कौनसा है?
(क) 97°25′ पू. (ख) 77°6′ पू. (ग) 68°7′ पू. (घ) 82°32′ पू.

(iii) उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और सिक्किम की सीमाएँ किस देश को छूती हैं?
(क) चीन (ख) भूटान (ग) नेपाल (घ) म्यांमार।

(iv) ग्रीष्मावकाश में आप यदि कवरत्ती जाना चाहते हैं तो किस केन्द्र-शासित क्षेत्र में जाएँगे?
(क) पुडुचेरी (ख) लक्षद्वीप (ग) अंडमान और निकोबार (घ) दीव और दमन।

(v) मेरे मित्र एक ऐसे देश के निवासी हैं जिस देश की सीमा भारत के साथ नहीं लगती है। आप बताइए, वह कौन-सा देश है?
(क) भूटान (ख) ताजिकिस्तान (ग) बांग्लादेश (घ) नेपाल।

उत्तरमाला

(i) (ख) (ii) (क) (iii) (ग) (iv) (ख) (v) (ख)।

प्रश्न 2. निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए–

(i) अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी में स्थित द्वीप समूह के नाम बताइए। दक्षिण में कौन-कौन से द्वीपीय देश हमारे पड़ोसी हैं?

उत्तर–अरब सागर में स्थित द्वीप समूह–लक्षद्वीप द्वीप समूह।

बंगाल की खाड़ी में स्थित द्वीप समूह–अंडमान और निकोबार द्वीप समूह।

दक्षिण में भारत के द्वीपीय पड़ोसी देश हैं–(1) श्रीलंका, (2) मालदीव।

(ii) उन देशों के नाम बताइए जो क्षेत्रफल में भारत से बड़े हैं।

उत्तर–क्षेत्रफल में भारत से बड़े देश हैं—

(1) रूस, (2) कनाडा, (3) संयुक्त राज्य अमेरिका, (4) चीन, (5) ब्राजील, (6) ऑस्ट्रेलिया।

(iii) हमारे उत्तर-पश्चिमी, उत्तरी तथा पूर्वी पड़ोसी देशों के नाम बताइए।

उत्तर–उत्तर-पश्चिमी पड़ोसी देश–पाकिस्तान, अफगानिस्तान।

उत्तरी पड़ोसी देश–चीन, नेपाल, भूटान।

पूर्वी पड़ोसी देश–म्यांमार, बांग्लादेश।

(iv) भारत में किन-किन राज्यों से कर्क रेखा गुजरती है? उनके नाम बताइए।

उत्तर–कर्क रेखा भारत के अग्रलिखित राज्यों से होकर गुजरती है—

लोकतांत्रिक राजनीति–1 (राजनीति विज्ञान)

अध्याय 1. लोकतंत्र क्या? लोकतंत्र क्यों?

पाठ-सार

लोकतंत्र क्या है?–समकालीन दुनिया में लोकतंत्र ही सबसे लोकप्रिय शासन पद्धति है। लोकतंत्र शब्द अंग्रेजी भाषा के 'डेमोक्रेसी' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है और अंग्रेजी का डेमोक्रेसी शब्द यूनानी शब्द 'डेमोक्रेशिया' से बना है और डेमोक्रेशिया दो शब्दों 'डेमोस' तथा 'क्रेशिया' से मिलकर बना है जिसमें डेमोस का अर्थ है–'लोग' और 'क्रेशिया' का अर्थ है–शासन। इस प्रकार डेमोक्रेसी या लोकतंत्र का अर्थ है–लोगों का शासन।

अब्राहम लिंकन ने भी इसके अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि ''लोकतंत्र लोगों का, लोगों के लिए और लोगों के द्वारा चलने वाली शासन व्यवस्था है।''

लोकतंत्र की एक सरल परिभाषा–लोकतंत्र शासन का एक ऐसा रूप है जिसमें शासकों का चुनाव लोग करते हैं।

लेकिन यह सरल परिभाषा पूर्ण या पर्याप्त नहीं है। इससे असली लोकतंत्र और दिखावटी लोकतंत्र वाली सरकारों में फर्क नहीं किया जा सकता।

लोकतंत्र की विशेषताएँ–

(1) प्रमुख फैसले निर्वाचित नेताओं के हाथ
(2) स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावी मुकाबला
(3) एक व्यक्ति-एक वोट-एक मोल
(4) कानून का राज और अधिकारों का आदर

लोकतंत्र ही क्यों–लोकतंत्र में सभी को अपनी बात स्वतंत्रतापूर्वक कहने की स्वतंत्रता होती है, गैर-लोकतांत्रिक सरकारों में नागरिकों को यह स्वतंत्रता नहीं होती है। लोकतंत्र के पक्ष तथा विपक्ष में निम्नलिखित तर्क दिये जाते हैं–

लोकतंत्र के खिलाफ तर्क–

(1) अस्थिर शासन
(2) नैतिकता को स्थान नहीं
(3) निर्णयों में देरी
(4) खराब फैसले
(5) भ्रष्टाचार व अधिक व्यय
(6) जनता को शासन की समस्याओं का ज्ञान नहीं

निश्चित रूप से लोकतंत्र सभी समस्याओं को खत्म करने वाली जादू की छड़ी नहीं है। सरकार के स्वरूप के तौर पर लोकतंत्र सिर्फ इसी बुनियादी चीज को देखता है कि लोग अपने बारे में खुद फैसले करें। इन फैसलों में उक्त त्रुटियाँ हो सकती हैं। लेकिन हमारे सामने सरकार के स्वरूपों के जो विकल्प उपलब्ध हैं, उनमें लोकतंत्र किसी भी दूसरे से बेहतर है।

लोकतंत्र के पक्ष में तर्क–

(1) अधिक जवाबदेही युक्त शासन–
(2) बेहतर निर्णय
(3) मतभेदों और टकरावों के मध्य संतुलन
(4) नागरिकों का सम्मान बढ़ाता है
(5) गलतियों में सुधार की गुंजाइश

अत: स्पष्ट है कि अन्य शासन व्यवस्थाओं की तुलना में लोकतंत्र सबसे अच्छी शासन व्यवस्था है क्योंकि इसमें अच्छे निर्णयों के लिए अधिक अवसर उपलब्ध होते हैं; इसमें लोगों की इच्छाओं का सम्मान किये जाने की ज्यादा संभावना है; इसमें अलग-अलग तरह के लोग ज्यादा बेहतर ढंग से साथ-साथ रह सकते हैं। साथ ही इसमें गलती सुधारने का अवसर भी मिलता है।

लोकतंत्र का वृहत्तर अर्थ–आज की दुनिया में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का सबसे आम रूप है–लोगों द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन चलाना। इसमें सभी लोगों की तरफ से बहुमत को फैसले लेने का अधिकार होता है और यह बहुमत भी स्वयं शासन नहीं चलाता। बहुमत का शासन भी चुने हुए प्रतिनिधियों के माध्यम से होता है।

लोकतांत्रिक फैसले का अर्थ होता है, उस फैसले से प्रभावित होने वाले सभी लोगों के साथ विचार-विमर्श के बाद और उनकी स्वीकृति से फैसले लेना। इसमें कम शक्तिशाली का भी फैसला लेने में उतना ही महत्त्व होता है जितना कि शक्तिशाली का।

कई बार हम लोकतंत्र शब्द का प्रयोग किसी मौजूदा सरकार के लिए नहीं करके कुछ आदर्शों के लिए करते हैं। लोकतंत्र शासन व्यवस्था वह है जिसमें कोई भूखा पेट सोए नहीं तथा प्रत्येक नागरिक फैसले लेने में समान भूमिका निभाए तथा इसके लिए वोट के समान अधिकार के साथ-साथ हर नागरिक को सूचना की समान उपलब्धता, बुनियादी शिक्षा, बुनियादी संसाधन और पक्की निष्ठा होनी चाहिए।

यद्यपि इन आदर्शों पर आज किसी भी देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था खरी नहीं उतरती है, लेकिन इन आदर्शों की कसौटी में हम किसी भी देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था का मूल्यांकन कर सकते हैं। एक आदर्श लोकतंत्र में निर्णय लेने की प्रक्रिया लोकतांत्रिक होनी चाहिए।

पाठगत प्रश्न

पृष्ठ 3

प्रश्न–मैंने तो यह भी सुना है कि लोकतंत्र एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ लोक पर तंत्र हावी रहता है। इसके बारे में आपकी क्या राय है?

उत्तर–मेरे दृष्टिकोण से यह कहना बिल्कुल निराधार है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में लोक पर तंत्र हावी रहता है। क्योंकि लोकतंत्र में जनता अपनी पसंद की सरकार चुनने के लिए स्वतंत्र होती है और वह सरकार अपने कार्यों के लिए जनता के प्रति उत्तरदायी होती है।

प्रश्न–रिबियांग स्कूल से घर गई और उसने लोकतंत्र के बारे में कुछ अन्य प्रसिद्ध व्यक्तियों के कथनों को जमा किया। इस बार उसने उन उक्तियों को कहने या लिखने वाले के नाम का उपयोग नहीं किया। वह चाहती है कि आप भी इन्हें पढ़ें और बताएँ कि ये उक्तियाँ कितनी अच्छी या उपयोगी हैं?

(i) लोकतंत्र हर व्यक्ति को अपना शोषक आप बन जाने का अधिकार देता है।

(ii) लोकतंत्र का मतलब है–अपने तानाशाहों का चुनाव करना पर उनके मुंह से अपनी इच्छा की बातें सुनने के बाद।

(iii) व्यक्ति की न्यायप्रियता लोकतंत्र को संभव बनाती है, लेकिन अन्याय के प्रति व्यक्ति का रुझान लोकतंत्र को जरूरी बनाता है।

(iv) लोकतंत्र शासन का ऐसा तरीका है जो यह सुनिश्चित करता है कि हम जैसी सरकार के लायक हैं वैसी सरकार ही हम पर शासन करे।

(v) लोकतंत्र की सारी बुराइयों को और अधिक लोकतंत्र से ही दूर किया जा सकता है।

उत्तर–टिप्पणियाँ–

(i) कुछ हद तक यह विचार सही है कि हम जिस प्रतिनिधि का चुनाव करते हैं, वही आगे चलकर हमारा दमन व शोषण करता है। लेकिन यह लोकतंत्र का दोष न होकर, व्यक्ति का दोष होता है। अतः यह विचार लोकतंत्र के दुरुपयोग को दर्शाता है।

(ii) यह लोकतंत्र के सिद्धान्त के खिलाफ है। ऐसे विचारों की लोकतांत्रिक समाज तथा शासन व्यवस्था में कोई उपयोगिता नहीं है।

(iii) लोकतंत्र शासक वर्ग से न्याय की मांग करता है। यदि जनप्रतिनिधि लोगों की समस्याओं के साथ न्याय नहीं कर पाते हैं, तो लोकतंत्र बेमानी हो जाता है। अतः व्यक्ति की न्यायप्रियता लोकतंत्र को संभव बनाती है।

दूसरी तरफ अन्याय के प्रति व्यक्ति का रुझान लोकतंत्र को जरूरी बनाता है क्योंकि सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक अन्याय को लोकतांत्रिक ढांचे के तहत ही प्रभावी ढंग से दूर किया जा सकता है।

अर्थशास्त्र

1. पालमपुर गाँव की कहानी

पाठ-सार

इस अध्याय में पालमपुर गाँव की कहानी के माध्यम से विभिन्न उत्पादन क्रियाओं की जानकारी प्रदान की गई है। साथ ही इस कहानी से यह भी ज्ञात होगा कि वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करने के लिए विभिन्न प्रकार के संसाधनों की आवश्यकता होती है। पालमपुर गाँव में मुख्य आर्थिक क्रिया कृषि है एवं कई अन्य गैर कृषि गतिविधियाँ जैसे—लघुस्तरीय विनिर्माण, डेयरी, परिवहन, दुकानदारी आदि भी की जाती हैं।

उत्पादन का संगठन–

उत्पादन के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन किया जाता है। किसी भी वस्तु या सेवा का उत्पादन करने हेतु चार प्रमुख साधनों की आवश्यकता पड़ती है। ये साधन निम्न हैं—भूमि तथा अन्य प्राकृतिक संसाधन, जैसे—जल, वन, खनिज, श्रम, भौतिक पूँजी (औजार, मशीन, भवन तथा कच्चा माल और नकद मुद्रा आदि) एवं मानव पूँजी। किसी वस्तु का उत्पादन करने हेतु सबसे पहले भूमि एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों की आवश्यकता पड़ती है। दूसरी प्रमुख आवश्यकता काम करने वाले लोगों अर्थात् श्रम की आवश्यकता पड़ती है। उत्पादन हेतु तीसरी आवश्यकता भौतिक पूँजी की होती है जिसमें स्थायी पूँजी एवं कार्यशील पूँजी सम्मिलित होती है। औजार, मशीन, भवन आदि स्थायी पूँजी तथा कच्चा माल, नकद मुद्रा, मजदूरी आदि कार्यशील पूँजी के उदाहरण हैं। इन तीनों साधनों अथवा भूमि, श्रम एवं पूँजी को संगठित कर उत्पादन करने हेतु चौथे साधन के रूप में मानव पूँजी की आवश्यकता पड़ती है।

पालमपुर में खेती–

पालमपुर में खेती की स्थिति को निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) भूमि स्थिर है–पालमपुर का मुख्य व्यवसाय कृषि है एवं पालमपुर में जुताई के अन्तर्गत भूमि में कोई विस्तार नहीं हुआ।

(2) क्या उसी भूमि से अधिक पैदावार करने का कोई तरीका है?–कृषि हेतु उपलब्ध स्थिर भूमि से कई तरीकों से अधिक पैदावार की जा सकती है। उस भूमि पर बहुविध फसल प्रणाली अपनाकर, बिजली से चलने वाले नलकूप लगाकर, सिंचाई सुविधाओं में विस्तार कर, अधिक उपज वाले बीजों का उपयोग कर, रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का उपयोग कर उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है।

(3) क्या भूमि यह धारण कर पाएगी?–खेती की आधुनिक कृषि विधियों ने प्राकृतिक संसाधन आधार का अति उपयोग किया है। इसके निम्न दुष्परिणाम हुए हैं—

(i) उर्वरकों के अधिक प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता कम हो गई है।

(ii) नलकूपों से सिंचाई के कारण भूमि जल के सतत प्रयोग से भौम जल स्तर कम हो गया है।

(4) पालमपुर के किसानों में भूमि किस प्रकार वितरित है?–पालमपुर में 450 परिवार निवास करते हैं जिनमें से 150 परिवारों के पास खेती के लिए कोई भूमि नहीं है। 240 परिवारों के पास छोटी-छोटी कृषि जोतें अर्थात् 2 हेक्टेयर से कम कृषि भूमि है। पालमपुर में 60 परिवार मझोले एवं बड़े कृषकों के हैं जिनके पास 2 हेक्टेयर से अधिक भूमि है तथा कुछ बड़े कृषकों के पास 10 हेक्टेयर से अधिक भूमि है।

(5) श्रम की व्यवस्था कौन करेगा?–छोटे कृषक अपने खेतों पर स्वयं कार्य करके श्रम की व्यवस्था स्वयं ही करते हैं। मझोले एवं बड़े कृषकों के खेतों पर छोटे किसान परिवारों के सदस्य और भूमिहीन श्रमिक मजदूरी पर कार्य करते हैं। बड़े कृषक मजदूरों को नकद अथवा अनाज के रूप में मजदूरी प्रदान करते हैं। खेत में काम करने वाले श्रमिक या तो दैनिक मजदूरी के आधार पर कार्य करते हैं या उन्हें कार्य विशेष, जैसे—कटाई या पूरे साल के लिए काम पर रखा जाता है।

पालमपुर में खेतिहर श्रमिकों में बहुत ज्यादा स्पर्धा है, इसलिए लोग कम वेतन पर भी काम करने को सहमत हो जाते हैं। अत: गाँव में भूमिहीन श्रमिक एवं मजदूरों की आर्थिक स्थिति काफी खराब होती है।

(6) खेतों के लिए आवश्यक पूँजी—गाँव में कृषि क्षेत्र में आधुनिक आगतों अथवा साधनों हेतु अधिक पूँजी की आवश्यकता पड़ती है। छोटे कृषक अपनी कृषि आगतों हेतु साहूकारों एवं व्यापारियों से ऋण लेते हैं। इसके विपरीत मझोले एवं बड़े कृषक खेती से बचत प्राप्त करते हैं तथा उसी बचत से पूँजी की व्यवस्था करते हैं। साहूकारों एवं व्यापारियों से लिये गए कर्जों पर ब्याज की दर बहुत ऊँची होती है।

(7) अधिशेष कृषि उत्पादों की बिक्री—गाँवों में प्राय: छोटे कृषकों के पास उत्पादन का बहुत कम अधिशेष रहता है क्योंकि वे परिवार की आवश्यकता पूरी करने के पश्चात् बहुत कम उत्पाद बचा पाते हैं। मझोले एवं बड़े कृषकों के पास कृषि उत्पाद की काफी मात्रा अधिशेष के रूप में रहती है अत: वे कृषि अधिशेष की बिक्री करते हैं। बाजार में व्यापारी अधिशेष उत्पाद (गेहूँ) को खरीदकर उसे आगे कस्बों और शहरों के दुकानदारों को बेच देते हैं।

पालमपुर में गैर कृषि क्रियाएँ—

पालमपुर में कृषि मुख्य आर्थिक गतिविधि है। किन्तु इसके अतिरिक्त भी ग्रामीण कई अन्य गैर कृषि कार्यों में संलग्न हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रमुख गैर कृषि उत्पादन क्रियाएँ निम्न प्रकार हैं—

(1) डेयरी : अन्य प्रचलित क्रिया—पालमपुर में कृषि के अतिरिक्त डेयरी मुख्य व्यवसाय है। लोग दूध को आस-पास के क्षेत्रों एवं गाँवों में बेचते हैं।

(2) पालमपुर में लघुस्तरीय विनिर्माण का एक उदाहरण—पालमपुर में कई विनिर्माण कार्य छोटे-छोटे स्तर पर किए जाते हैं। विनिर्माण में बहुत सरल उत्पादन विधियों का प्रयोग होता है। विनिर्माण कार्य पारिवारिक श्रम की सहायता से अधिकतर घरों या खेतों में किया जाता है। श्रमिकों को कभी-कभार ही किराए पर लिया जाता है।

(3) पालमपुर के दुकानदार—पालमपुर में कई छोटे-छोटे दुकानदार हैं जो शहरों के थोक बाजारों से दैनिक जीवन की आवश्यक वस्तुएँ खरीदते हैं और उन्हें गाँव में लाकर बेचकर आजीविका कमाते हैं।

(4) परिवहन : तेजी से विकसित होता एक क्षेत्रक—पालमपुर में परिवहन सेवा के क्षेत्र में भी अनेक लोग संलग्न हैं। रिक्शावाले, तांगेवाले, जीप, ट्रैक्टर, ट्रक ड्राइवर; परम्परागत बैलगाड़ी और दूसरी गाड़ियाँ चलाने वाले वे लोग हैं, जो परिवहन सेवाओं में शामिल हैं।

पाठगत प्रश्न/क्रियाकलाप

पृष्ठ 3

प्रश्न—सारणी 1.1 में 10 लाख (मिलियन) हेक्टेयर की इकाइयों में भारत में कृषि क्षेत्र को दिखाया गया है। सारणी के नीचे दिए गए आरेख में इसे चित्रित करें। आरेख क्या दिखाता है? कक्षा में चर्चा करें।

सारणी 1.1 : सम्बन्धित वर्षों में जुताई क्षेत्र

वर्ष	जुताई क्षेत्र (मिलियन हेक्टेयर)
1950-51	132
1990-91	186
2000-01	186
2010-11 (P)	198
2011-12 (P)	196
2012-13 (P)	194
2013-14 (P)	201
2014-15 (P)	198
2015-16 (P)	197
2016-17 (P)	200

(P)–अनंतिम गणना